श्रीः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी।
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥

श्री ऊत्तुक्काडु वेङ्कटकवि रचितम्

॥ श्रीरङ्गनाथ पञ्चकम् ॥

This document has been prepared by*

Sunder Kidambi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness *śrīmad āṇḍavan* of *śrīraṅgam*

*This was typeset using LaTeX and the **skt** font. Our sincere thanks to Smt. Vidya Soundarajan of Jakarta, Indonesia, for providing us the text of this stotram.

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

॥ श्रीरङ्गनाथ पञ्चकम् ॥

स्वीयतर भासकर चन्द मणियुक्त फण मण्डित भुजङ्ग शयनम्
मेघवर वासक सुवर्णगिरि सौभग पराभवमनन्त रुचिरम्।
लीनकर छन्द भुवनत्रय मुदाकर शुचिमधिक भूषणकरम्
नौमि भगवन्त मुख मन्द हसनन्तमति सुन्दरमनन्त शयनम्॥ १ ॥

रूपमव बोधमति नूतन मनोज्ञ मदनं भुवन मङ्गळकरम्
वारिधि सुधाकर सुताकर सुखातुर सुमाधुर सुशीलन पदम्।
भूत महदादयमलङ्कृत कळेबरमखण्ड करुणालय मुखम्
नौमि भगवन्त मुख मन्द हसनन्तमति सुन्दरमनन्त शयनम्॥ २ ॥

राचर चराचर पराधिक दुराकृति मुरादि पटु भीकर तनुम्
नारद वरादि नुत नीरद निभाकर मनोरथ सुमाधुर पदम्।
नादयुत गीत परवेद निनदानघ सनातन जनाधिक वृतम्
नौमि भगवन्त मुख मन्द हसनन्तमति सुन्दरमनन्त शयनम्॥ ३ ॥

सिद्धसुर चारण सनन्द सनकादय मुनीन्द्र गण घोषणपरम्
नित्य रचनीय वचनीय रसनीय रमणीय कमनीयत परम्।
पद्मदळ भास मकरन्द परिहास निजभक्त भव मोचनकरम्
नौमि भगवन्त मुख मन्द हसनन्तमति सुन्दरमनन्त शयनम्॥ ४ ॥

हेम मकुटादि कटकाभरण कङ्कण समुज्ज्वल मनोहर तनुम्
गीत नटनादय कलावृत सुधामृत निरञ्जन सुमङ्गळकरम्।
भागवत राम चरितामल धुरीण वचनादि परिपुरितकरम्
नौमि भगवन्त मुख मन्द हसनन्तमति सुन्दरमनन्त शयनम्॥ ५ ॥

॥ इति श्रीरङ्गनाथ पञ्चकं संपूर्णम् ॥